P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जन संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का अवदान

जय प्रका"ा यादव
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग
एम.एम.पी.जी. कॉलेज,
मोदीनगर, गाजियाबाद,
उ0 प्र0, भारत

सारांश

सूचना प्रौद्योगिकी का सीधा सम्बन्ध संचार व्यवस्था से है। संचार प्रणालियों में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी भाषा सीधे सूचना प्रोद्यौगिकी की भाषा बन गयी है। भारत प्राचीन काल से 'वसुवैध कुटुंबकम्' की अवधारणा को पुष्ट करता चला आ रहा है। उसी को आज पि"चम की शब्दावली में 'ग्लोबलाइजे"ान' कहा जा रहा है। सूचना प्रोद्यौगिकी के समर्थक 'वि"वग्राम' की कल्पना को सच साबित करने में जुटे हैं। संचार माध्यमों ने दुनिया को बहुत छोटा बना दिया है। आज सूचना क्रान्ति के द्वारा सूचनाओं का विस्फोट हो रहा है। इस सूचना क्रान्ति की संवाहक हिन्दी दुनियाँ में अपनी मौजूदगी बड़ी ताकत के साथ दर्ज कर रही है। सूचना प्रौद्योगिकी का कार्यक्षेत्र मूलतः समाज है। यह व्यक्ति को समष्टि एवं वि"व से जोड़ता है। इसका मूल उपकरण इंटरनेट एवं कम्प्यूटर है। इसके माध्यम से समाज के छोटे–बड़े सभी लोग सूचनाओं को अविलम्ब अन्यत्र बिना किसी रूकावट एवं समय अंतराल के संप्रेषित कर सकते हैं। इससे वे सामाजिक व्यावसायिक एवं व्यापारिक क्रिया कलापों में वृद्धि कर सकते हैं, अपना जीवन स्तर ऊँचा उठा सकते हैं। इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी जन कल्याण की भावना से जुड़ी हुई है। यह तकनीक इतनी सस्ती है कि गांव के किसान, मजदूर, गरीब सभी उपयोग कर सकते हैं। यही कारण है कि अब गांव के लोगों के हाथों में मोबाईल फोन आसानी से देखे जा सकते हैं। अभी टेक्नोलॉजी के और विस्तार की आव"यकता है। कम्प्यूटर इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े उपकरण दूरस्थ गाँवों, कस्बों और शहरो में सस्ते दामों पर उपलब्ध करना जरूरी है। इसके लिए बिजली, टेलीफोन जैसे आधारभूत ढाँचे को विकसित करना होगा। हमारे दे"ा में सूचना प्रौद्योगिकी तब तक सफल नहीं हो सकती है जब तक वह भारतीय भाषाओं में आम आदमी के लिए उपलब्ध न हो। हमारे दे"ा में कम्प्यूटर का प्रचलन आम जन तक नहीं हो पा रहा है। इसका कारण अपनी भाषा में कार्य करने वाले हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर का अभाव है। मूल अक्षरों के लिए कोड़ योजना तैयार करना जरूरी है। आई0 टी0 पाठ्यक्रम में हिन्दी भाषा का प्रयोग जरूरी है। यह समझना आव"यक है कि ''सूचना प्रौद्योगिकी, संचार और इलैक्ट्रानिक का वह समन्वित रूप है जिसमें सूचना प्रणाली के वि"िाष्ट आयामों और उसकी प्रासंगिकता की खोज के द्वारा सूचना उत्पादन, वि"लेषण, भंडारण, संचरण आदि कार्य किए जाते हैं, जिसके महत्वपूर्ण अंग है– सूक्ष्म संसाधक, डेटा भंडारण तंत्र डेटा संचरण तत्व।''[1]

मुख्य शब्द : कम्प्यूटर, लैपटाप, इंटरनेट, वेबसाइट, पोर्टल, डेटा संचरण, भंडारण, प्रौद्योगिकी जनसंचार, माइक्रोसाफ्ट, मीडिया, हिन्दी, राजभाषा, वि"वग्राम, मेल, प्रतिनिधित्व, प्रिन्ट, व्यावसायिक, वेब पेज।

प्रस्तावना

कम्प्यूटर का हिन्दीकरण करने की बराबर को"ा"ा जारी है। कप्यूटर पर हिन्दी में टाइप करने के लिए कुंजी पटल में तीन विकल्प हैं टाइप राइटर, इनस्क्रिप्ट और फोनेटिक। सुविधा के अनुसार इनका प्रयोग करके अपना काम हिन्दी में किया जा सकता है। सी0 डेक0 संस्था ने 1988 में आई. आई. टी. कानपुर के सहयोग से बहुभाषी कप्यूटिंग तथा इलेक्ट्रानिकी 'जिस्ट' प्राद्यौगिकी प्रणाली प्रदान की। इसके माध्यम से अंग्रेजी के साथ हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में कार्य होना संभव हुआ। आई. वी. एम. द्वारा विकसित साफ्टवेयर में हिन्दी के 65000 शब्दों को पहचानने की क्षमता है। हिन्दी अंग्रेजी के लिए आवाज पहचानने की प्रणाली का भो विकास किया गया है। यह शब्दों को पहचानकर कम्प्यूटर पर लिपिबद्ध कर देती है। एच. पी. कम्प्यूटर हाथ से लिखी

हिन्दी लिखावट को पहचानकर कम्प्यूटर में लिपिबद्ध कर देती है। इस प्रकार अंग्रेजी न जानने वाले लोग भी कम्प्यूटर पर काम कर सकते हैं।

आज की हिन्दी, इंटरनेट एवं वबसाइट पर मौजूद है। वेब दुनिया डॉट काम लि0 ने हिन्दी पोर्टल का विकास कर इस कार्य को पूरा किया है। यहाँ लिप्यांतरण की ऐसी सुविधा है जिसमें रोमन में टाइप पत्र दूसरी तरफ देवनागरी में प्राप्त हो सकता है। बी.बी.सी. ने हिन्दी की वेबसाइट विकसित की है। अब हिन्दी मे वेब पेज विकसित किया जा सकता है। माइक्रोसॉफ्ट, याहू, रेड़िफ आदि विदे"ाी कम्पनियों ने अपनी वेबसाईट पर हिन्दी को स्थान दिया है। इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी का प्रचलन बराबर बढ़ रहा है। अब हिन्दी के लोगों को इन्टरनेट पर कार्य करने में कोई परे"ाानी नहीं है। हिन्दी में उपलब्ध वेब साइट्स के माध्यम से सूचनाएँ ग्रहण की जा सकती हैं। सरलता एवं सहजता को ध्यान में रखकर हिन्दी में वेबसाइट्स का निर्माण किया जा सकता है। इसी के माध्यम से हम ई0 कॉमर्स तथा ई–प्र"ाासन के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। सूचना प्रोद्योगिकी विभाग भारत सरकार ने 'भारतीय भाषाओं के लिए तकनीकी विकास' नामक योजना शुरू की है। इस योजना की वेबसाइट बहुत महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार राजभाषा विभाग व गृह मन्त्रालय की वेबसाइट भी महत्वपूर्ण है। विदे"ाों में हिन्दी मूल के लोगों द्वारा लिखा जा रहा साहित्य हिन्दी की विभिन्न वेबसाईटों पर देखा जा सकता है।

अध्ययन का उद्दे"य

हमारे दैनिक जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ता जा रहा है। आज सरकारी, गैर सरकारी, ि"ाक्षा, विज्ञापन, बैंक, स्कूल, निगम, मंत्रालय, वि"वविद्यालय सभी क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व है। प्रिन्ट मीडिया तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने बहुगुणी विकास पर बल दिया है। पत्रिकाओं, पोस्टर, समाचार पत्र, बैनर विजिटंग कार्ड, पुस्तक लेखन, विवाह निमंत्रण, बधाई कार्ड जैसी विभिन्न सामग्रियों शोध प्रबंध, टंकण–मुद्रण, आदि क्षेत्रों में हिन्दी अपना महत्व स्थापित कर रही है। निःसन्देह ''सूचना प्रौद्योगिकी से हिन्दी को जोडने पर कुछ अत्यन्त सुखद परिणाम स्पष्टतः दिखाई देते हैं। एक तो जनमानस से जुड़ो भाषा हिन्दी, ए लीट क्लास से जुड गई। काम काज, खेल जगत, शेयर मार्किट, वित्त वाणिज्य, आंकड़े, कार्टून से भी जुड़ती चली गई।''[2] सूचना प्रौद्योगिकी एक स"ाक्त माध्यम है। इस माध्यम की भाषा हिन्दी एक वि"व भाषा बनने की राह में है। हम हिन्दी माध्यम से अपनी संस्कृति आचार–विचार एवं प्रतिभा से वि"व के लोगों तक पहुँच कर अवगत करा सकेंगे। हिन्दीभाषा के आधुनिकीकरण द्वारा हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। हिन्दी का वर्चस्व बराबर व्यवसाय, बाजार एवं उपभोक्ता के बीच बढ़ रहा है। किन्तु हमें ध्यान रखना होगा कि '' मीड़िया प्रौद्योगिकी सिर्फ समय का भंडारण नहीं करती, वह उसका प्रतिनिधित्व भी करती है। जैसाकि स्टीफन कर्न ने लिखा है, विभिन्न समाज किसी भी तरह के भविष्य से हीन या किसी भी तरह के भविष्य की ओर बढने की संभावना से हीन होते हुए भी अपने इतिहास से कटा हुआ या उससे अत्यधिक बँधा हुआ महसूस कर सकते है। प्रौद्योगिकी, खास तौर से मीड़िया अकसर इतिहास के 'भीतर' या 'बाहर' होने के हमारे अनुभव के लिए एक विकास मार्ग मुहैया कर देता है। मीडिया की भौतिकता ऐसी भौतिक बारीकियाँ और दैनिक सांवेगिक इस्तेमाल रच देती हैं जिनके जरिये ये अनुभव अस्तित्व में आते हैं।''[3]

साहित्यावलोकन

जनसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी विषय पर लेखन के क्रम में निम्न साहित्य एवं पुस्तकों का अवलोकन किया गया है–

डा0 रामप्रका"ा–हिन्दी भाषा की विकास–यात्रा, पलक प्रका"ान, दिल्ली–09, डा0 कन्हैया लाल गांधी–हिन्दी की भगीरथ यात्रा, प्रभात प्रका"ात, नई दिल्ली–02, केवल जे. कुमार–भारत में जनसंचार, जयको पब्लि"िंग हाऊस, 2017। डा0 पूरनचंद टंडन– भाषा प्रोद्यौगिकी का युग और हिन्दी वर्चस्व, अना"ाक्ति द"ान, जुलाई–दिसम्बर, 2007। इस अध्ययन में इन्द्रप्रस्थ भारती, गगनांचल, भाषा आदि पत्रिकाओं का अध्ययन भी महत्वपूर्ण है। इस विषय पर लेखन के क्रम में इससे अतिरिक्त अन्य शोध पुस्तक या अध्ययन मेरी जानकारी में नहीं है।

वि"लेशण

संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी से हिन्दी का गहरा सम्बन्ध है। सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी के प्रचार प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दिया है। संचार, सूचना प्रौद्योगिकी एवं हिन्दी का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी के जानकार डॉ0 विल्वर ने संचार को ही विकास की संज्ञा दी है। उनका कहना है कि ''औद्योगिक–विकास की प्रक्रिया में कल–कारखानों और उद्योग–धंधों में संप्रेषण की समस्या सदैव रहती है। लोकभाषा का विकास इसीलिए होता है। व्यापार–व्यवसाय को बढ़ाने के लिए जनसंचार के माध्यमों का प्रयोग बढ़ता है। विज्ञापनों में लोकभाषा स्वीकार्य होने लगती है।''[4]

अब पाठकों के बीच समाचारों को देखने और पढ़ने के तौर तरीकों में व्यापक बदलाव आ रहे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा आदि विकसित दे"ाों में अखबारों की तुलना में लोग ई–अखबार अधिक पढ़ रहे हैं। भारत के शहरी इलाकों में भी इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ देखने को मिल रही हैं। इसका अच्छा उदाहरण जागरण काम, अमर उजाला कॉम, बी0बी0सी0 हिन्दी कॉम, इत्यादि। इसके पाठको में विदे"ा में रहने वाले अप्रवासी भारतीयों के अलावा दे"ा में भी बहुसंख्यक पाठक मौजूद हैं। सूचनाओं को पूरे वि"व में फैलाने का काम करने वाला यह माध्यम जिन संसाधनों पर टिका है उनमें संपादकीय विभाग मुख्य है। प्रिंट, रेडियो, आका"ावाणी, तथा इंटरनेट स समाचार को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए सैकड़ो लोग जुटे रहते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास क्षेत्र में अभी बहुत सी बाधांए भी हैं जो इसकी गति को अवरूद्ध कर देती हैं। डा0 ओम विकास ने इस तरह की बाधाओं को निम्नवत् बताया है–

''बिहार, मध्यप्रदे"ा, राजस्थान, उत्तर प्रदे"ा तथा अन्य राज्यों में अनि"्चित/ अनियमित, थोड़ी माँग।

भाषा–प्रौद्योगिकी में अनुसंधान एवं विकास उत्पाद परक नहीं। भाषा प्रौद्योगिकी में कम्प्यूटर वैज्ञानिक कम रूचि रखते हैं। भाषा विज्ञान, भाषा ि"क्षण तथा भाषा अध्ययन के पाठ्यक्रमों में सूचना प्रौद्योगिकी मोडयूल का समावे"ा नहीं है। सूचना प्रौद्योगिकी उत्पादों तथा सेवाओं के ऐसे आयात को नियंत्रित करने में असमर्थ होना जिनमें भारतीय भाषाओं में संसाधन की सुविधा नहीं है। इसकी, यूनी कोड़ अन्य कोड प्रचलन में, सहमति का अभाव। भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी के बारे में विदे"ाों में बहुत कम जानकारी। भाषा प्रौद्योगिकी के अंतरण की गति धीमी।''[5] आज वही राष्ट्र शक्ति"ाली है जिसके पास जन संचार एवं सूचना तन्त्र का विकसित जाल है। टी. बी., लैपटॉप, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन के जन संचार के जुडाव से सूचना का विस्फोट हुआ है। वै"वीकरण के इस युग में यह भी आव"यक हो गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी को आम लोगों से जोड़ा जाय। इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े साधनों को भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना बहुत आव"यक है। रोमन लिपि के बढ़ते प्रभाव ने वि"व की अनेक लिपियों के अस्तित्व के सामने संकट पैदा कर दिया है। किन्तु भारतीय भाषाओं खासकर हिन्दी में समक्ष यह संकट नहीं है। सी. डैक ने मल्टीमीडिया विड़ियो कार्यो की एक ऐसी श्रृंखला विकसित कर दी है जिसमें 'लिप्स' नामक एक साफ्टवेयर विकसित किया गया है। इसके माध्यम से फिल्मों के उप"गीर्षक हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में तैयार किये जा सकते हैं। इससे किसी भी विदे"ाी भाषा की फिल्म को अपनी भाषा में देखा जा सकता है। ''हर भाषा का एक परिनिष्ठित रूप होता है और उसी का प्रयोग करना चाहिए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भाषा अपनी बात सामने रखने का माध्यम मात्र नहीं होती बल्कि वह समाज–संस्कृति तथा राष्ट्र का संस्कार भी होती है। यह देखना हिन्दी भाषी समाज एवं बुद्धिजीवियों का दायित्व है कि जनसंचार माध्यम हिन्दी को व्यापार की नहीं, संस्कार की भाषा मानकर चलें।''[6]

कम्प्यूटर का विकास सबसे पहले ऐसे दे"ाों में हुआ जहाँ की भाषा अंग्रेजी या रोमन लिपि पर आधारित कोई अन्य यूरोपीय भाषा रही है। यही कारण है कि रोमण लिपियों से इटर लिपियों में कम्प्यूटर पर कार्य बाद में शुरू हुआ। ''वस्तुतः कम्प्यूटर की दो संकेतों की अपनी एक स्वतन्त्र गणितीय भाषा है और उसी में वे हमारी भाषाओं को ग्रहण करके अपने समस्त कार्य करते हैं। इसलिए कम्प्यूटर के लिए किसी भी भाषा को अपनाने में कोई तकनीकी बाधा नहीं है। लेकिन यह भी सत्य है कि रेखिक लिपि होने के कारण रोमन लिपि यांत्रिक दृष्टि से अपेक्षाकृत सरल है। रोमनतर लिपियों में इतनी अधिक भिन्नता और जटिलता है कि उन्हें एक कुंजीपटल पर लाना कोई सरल कार्य नहीं है। अरबी और हिब्रू दायें से बायें लिखी जाती हैं। चीनी लिपि ऊपर से नीचे लिखी जाती है। किन्तु जहाँ तक भारतीय लिपियों का संबंध ह वे अपने मूलस्वरूप में अक्षरात्मक हैं। वस्तुतः ये सभी लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई हैं।''[7] अब जन संचार के साधनों एवं तकनीक का बहुत तेजी से विकास हो रहा है। इंटरनेट भविष्य का सबसे महत्वपूर्ण एवं द्रुत संचार माध्यम साबित हो रहा है। अब इंटरनेट वेब लेखन और वेब प्रका"ान को बढ़ावा मिल रहा है। इंटरनेट पत्रकारिता को ऑनलाइन पत्रकारिता के नाम से भी जाना जा रहा है। इसका वेब पत्रकारिता का नाम भी प्रचलित हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी कानून 2000 के अधिनियम द्वारा सरकार ने सूचना प्रौद्योगिकी को परिभाषित करने को कोि"ा"ा की है। इस कानून के अनुसार इलैक्ट्रोनिक दस्तावेज अब कानूनी रूप से वैध हैं। अब ई–मेल द्वारा भेजा गया दस्तावेज न्यायालय की नजर में कानूनी दस्तावेज है। प्राईवेसी का अधिकार एक मौलिक अधिकार है किन्तु इसे कानून द्वारा अभी परिभाषित नहीं किया गया है। अच्छी बात यह है कि इलैक्ट्रॉनिक सुविधा देनें वाले तमाम विकसित राष्ट्रों में भारत भी शामिल हो गया है। अब यह समय दूर नहीं है जब हिन्दी सूचना प्रौद्योगिकी का अभिन्न अंग बनकर वि"व भाषा बनेगी और भारत वर्ष को गौरव प्रदान करेगी।

निश्कर्श

जनसंचार् एवं सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में हिन्दी का योगदान अति महत्वपूर्ण है। हिन्दी ने इस क्षेत्र में प्रिन्ट एवं इलैक्ट्रोनिक साधनों के द्वारा कन्टेन्ट को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य किया है। हिन्दी भाषा में भारतीय समाज में उठने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों मसलन महंगाई, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्य जन आन्दोलनों को जन संचार माध्यमों द्वारा सरकारों को ध्यान भी आकृष्ट किया है। यह भी सच है कि सूचनाओं के नये संसार में किताबें भी नहीं मरेंगी। सिनेमा के आने के प"चात् भी आज थियेटर जिन्दा है। टेलीविजन आने के बाद भी अखबारों की संख्या घटी नहीं बल्कि बढ़ी है। भाषा के बिना संसार की कल्पना नहीं की जा सकती। इस प्रकार हिन्दी ही भारत दे"ा की जनसंचार एवम् सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा बन सकती है।

अंत टिप्पणी

1. *गंगानाचल, भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद, नई दिल्ली, जुलाई–सितम्बर 2008*
2. *भाषा, केन्द्रीय हिन्दी निदे"ालय उ0 ि"ा0 विभाग, नई दिल्ली मई–जून 2002, पृ0 204*
3. *मीडिया नगर, उभरता मंजर, वाणी प्रका"ान दिल्ली, 2005, पृ0–128*
4. *इन्द्रप्रस्थ भारती, हिन्दी अकादमी, दिल्ली, अक्टूबर–दिसम्बर 1999, पृ0–44*
5. *भाषा केन्द्रीय हिन्दी निदे"ालय, उ0 ि"ा0 विभाग, नई दिल्ली, मई–जून 2002, पृ0 पृ0–198*
6. *इन्द्रप्रस्थ भारती, हिन्दी अकादमी, दिल्ली, अक्टूबर–दिसम्बर 1999, पृ0–108*
7. *इन्द्रप्रस्थ भारती, हिन्दी अकादमी, दिल्ली, अक्टूबर–दिसम्बर 1999, पृ0–67*